कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



भारत में राष्ट्रवाद

- भारत में भी आधुनिक राष्ट्रवाद के उदय की परिघटना उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन के साथ गहरे तौर पर जुड़ी हुई थी।
- औपनिवेशिक शासकों के ख़िलाफ़ संघर्ष के दौरान लोग आपसी एकता को पहचानने लगे थे।
- उत्पीड़न और दमन के साझा भाव ने विभिन्न समूहों को एक-दूसरे से बाँध दिया था।
- लेकिन हर वर्ग और समूह पर उपनिवेशवाद का असर एक जैसा नहीं था। उनके अनुभव भी अलग थे और स्वतंत्रता के मायने भी भिन्न थे।
- महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने इन समूहों को इकट्ठा करके एक विशाल आंदोलन खड़ा किया।
- परंतु इस एकता में टकराव के बिंदु भी निहित थे।

LET'S LEARN TOGETHER

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद

- 1919 से बाद के सालों में राष्ट्रीय आंदोलन नए इलाकों तक फैल गया था।
- इसमें नए सामाजिक समूह शामिल हो गए थे और संघर्ष की नयी पद्धतियाँ सामने आ रही थीं।

प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव :-

- विश्वयुद्ध ने एक नयी आर्थिक और राजनीतिक स्थिति पैदा कर दी थी।
- इसके कारण रक्षा व्यय बहुत बढ़ गया था।
- इस खर्चे की भरपाई करने के लिए युद्ध के नाम पर क़र्ज़ लिए गए और करों में वृद्धि की गई।
- सीमा शुल्क बढ़ा दिया गया और आयकर शुरू किया गया।
- युद्ध के दौरान 1913 से 1918 के बीच कीमतें भी बढ़कर दोगुना हो चुकी थीं जिससे आम लोगों की मुश्किलें बढ़ गई थीं।
- गाँवों में सिपाहियों को जबरन भर्ती किया गया जिसके कारण ग्रामीण इलाकों में व्यापक गुस्सा था।
- 1918-19 तथा 1920-21 में देश के बहुत सारे हिस्सों में फसल खराब हो गई जिसके कारण खाद्य पदार्थों का भारी अभाव पैदा हो गया।
- उसी समय फ्लू की महामारी फैल गई।
- 1921 की जनगणना के मुताबिक़ दुर्भिक्ष और महामारी के कारण 120-130 लाख लोग मारे गए।

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- लोगों को उम्मीद थी कि युद्ध खत्म होने के बाद उनकी मुसीबतें कम हो जाएँगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।
- इसी समय एक नया नेता सामने आया और उसने संघर्ष का एक नया ढंग, एक नया तरीका पेश किया।

सत्याग्रह का विचार :-

- महात्मा गांधी जनवरी 1915 में भारत लौटे।
- इससे पहले वे दक्षिण अफ़्रीका में थे।
- उन्होंने एक नए तरह के जनआंदोलन के रास्ते पर चलते हुए वहाँ की नस्लभेदी सरकार से सफलतापूर्वक लोहा लिया था।
- इस पद्धति को वे सत्याग्रह कहते थे।

दक्षिण अफ़्रीका में भारतीय मज़दूर फोकस्त्रस्ट से गुज़र रहे हैं,
6 नवंबर 1913



- न्यूकैसल से ट्रांसवाल की ओर बढ़ रहे इस जुलूस में महात्मा गांधी मज़दूरों का नेतृत्व कर रहे थे।
- जब जुलूस को रोका गया और गांधीजी को गिरफ़्तार किया गया तो हज़ारों मज़दूर अश्वेतों के अधिकारों का हनन करने वाले नस्लभेदी क़ानूनों के ख़िलाफ़ सत्याग्रह में शामिल हो गए।

सत्याग्रह

''सत्य का शक्ति पर आग्रह''

और

''सत्य की खोज पर ज़ोर दिया जाता था।''

- इसका अर्थ यह था कि ''अगर आपका उद्देश्य सच्चा है, यदि आपका संघर्ष अन्याय के ख़िलाफ़ है तो उत्पीड़क से मुक़ाबला करने के लिए आपको किसी शारीरिक बल की आवश्यकता नहीं है।''
- प्रतिशोध की भावना या आक्रामकता का सहारा लिए बिना सत्याग्रही केवल अहिंसा के सहारे भी अपने संघर्ष में सफल हो सकता है।
- इसके लिए दमनकारी शत्रु की चेतना को झिंझोड़ना चाहिए।
- उत्पीड़क शत्रु को इस बात के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए कि वह हिंसा के ज़रिए सत्य को स्वीकार करने की अपेक्षा सच्चाई को सहज भाव से स्वीकार करें।

Download Mission Cyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- इस संघर्ष में अंतत: सत्य की ही जीत होती है।
- गांधीजी का विश्वास था की अहिंसा का यह धर्म सभी भारतीयों को एकता के सूत्र में बाँध सकता है।

सत्याग्रह पर महात्मा गांधी के विचार

'सत्याग्रह शारीरिक बल नहीं है।
सत्याग्रही अपने शत्रु को कष्ट नहीं पहुँचाता है।
वह अपने शत्रु का विनाश नहीं चाहेगा।
सत्याग्रह के प्रयोग में दुर्भावना के लिए कोई स्थान नहीं होता।
'सत्याग्रह तो शुद्ध आत्म बल है।
सत्य ही आत्मा का आधार होता है।
इसीलिए इस बल को सत्याग्रह का नाम दिया गया है।
आत्मा ज्ञान से हमेशा लैस होती है।
इसमें प्यार की लौ जलती है...।
अहिंसा सर्वोच्च धर्म है...।

'भारत विनाशकारी शस्त्रों के मामले में ब्रिटेन या यूरोप का मुक़ाबला नहीं कर सकता। अंग्रेज़ युद्ध के देवता की उपासना करते हैं। वे सब हथियारों से लैस हो सकते हैं, होते जा रहे हैं। भारत में करोड़ों लोग कभी हथियार लेकर नहीं चल सकते। उन्होंने अहिंसा के धर्म को आत्मसात् कर लिया है...।'

- भारत आने के बाद गांधीजी ने कई स्थानों पर सत्याग्रह आंदोलन चलाया।
- 1917 में उन्होंने बिहार के चंपारन इलाक़े का दौरा किया और दमनकारी बागान व्यवस्था के ख़िलाफ़ किसानों को संघर्ष के लिए प्रेरित किया।
- 1917 में उन्होंने गुजरात के खेड़ा जिले के किसानों की मदद के लिए सत्याग्रह का आयोजन किया। फ़सल खराब हो जाने और प्लेग की महामारी के कारण खेड़ा जिले के किसान लगान चुकाने की हालत में नहीं थे। वे चाहते थे कि लगान वसूली में ढील दी जाए।
- 1918 में गांधीजी सूती कपड़ा कारखानों के मज़दूरों के बीच सत्याग्रह आंदोलन चलाने अहमदाबाद जा पहुँचे।

रॉलट एक्ट

- गांधीजी ने 1919 में रॉलट एक्ट के ख़िलाफ़ एक राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह आंदोलन चलाने का फ़ैसला लिया।
- भारतीय सदस्यों के भारी विरोध के बावजूद इस क़ानून को इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल ने बहुत जल्दबाजी में पारित कर दिया था।
- इस क़ानून के ज़रिए सरकार को राजनीतिक गतिविधियों को कुचलने और राजनीतिक क़ैदियों को 2 साल तक बिना मुक़दमा चलाए जेल में बंद रखने का अधिकार मिल गया था।
- महात्मा गांधी ऐसे अन्यायपूर्ण कानूनों के खिलाफ अहिंसक ढंग से नागरिक अवज्ञा चाहते थे।

आंदोलन के चरण :-

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

6 अप्रैल, 1919

- इसे 6 अप्रैल, 1919 से प्रारम्भ किया गया।
- विभिन्न शहरों में रैली-जुलूसों का आयोजन किया गया।
- रेलवे वर्कशॉप्स में कामगार हड़ताल पर चले गए। दुकानें बंद हो गईं।
- इस व्यापक जन-आंदोलन से चिंतित तथा रेलवे व टेलीग्राफ़ जैसी संचार सुविधाओं के भंग हो जाने की आंशका से भयभीत अंग्रेजों ने राष्ट्रवादियों पर दमन शुरू कर दिया।
- अमृतसर में बहुत सारे स्थानीय नेताओं को हिरासत में ले लिया गया।
- गांधीजी के दिल्ली में प्रवेश करने पर पाबंदी लगा दी गई।

10 अप्रैल, 1919

- 10 अप्रैल, 1919 को पुलिस ने अमृतसर में एक शांतिपूर्ण जुलूस पर गोली चला दी। इसके बाद लोग बैंकों, डाकखानों और रेलवे स्टेशनों पर हमले करने लगे।
- मार्शल लॉ लागू कर दिया गया और जनरल डायर ने कमान सँभाल ली।

13 अप्रैल, 1919

- 13 अप्रैल को जलियाँवाला बाग़ हत्याकांड हुआ।
- उस दिन अमृतसर में बहुत सारे गाँव वाले सालाना वैसाखी मेले में शिरकत करने के लिए जलियाँवाला बाग़ मैदान में जमा हुए थे।
- काफी लोग तो सरकार द्वारा लागू किए गए दमनकारी कानून का विरोध प्रकट करने के लिए एकत्रित हुए।
- यह मैदान चारों तरफ़ से बंद था।
- शहर से बाहर होने के कारण वहाँ जुटे लोगों को यह पता नहीं था कि इलाक़े में मार्शल लॉ लागू किया जा चुका है।
- जनरल डायर हथियारबंद सैनिकों के साथ वहाँ पहुँचा और जाते ही उसने मैदान से बाहर निकलने के सारे रास्तों को बंद करवा दिया तथा उसके सिपाहियों ने भीड़ पर अंधाधुंध गोलियाँ चला दीं। जिसमें सैंकड़ों लोग मारे गए।
- बाद में उसने बताया कि इस प्रकार से वह - सत्याग्रहियों के ज़हन में विस्मय और दहशत का 'एक नैतिक प्रभाव' उत्पन्न करना चाहता था।

13 अप्रैल, 1919 के बाद :-

- जलियाँवाला बाग़ की खबर फैली, उत्तर भारत के बहुत सारे शहरों में लोग सड़कों पर उतरने लगे।
- लोग सरकारी इमारतों पर हमला करने लगे।
- सरकार ने इन कार्रवाइयों को निर्ममता से कुचला ।
- सरकार ने लोगों को अपमानित और आतंकित किया।
- सत्याग्रहियों को ज़मीन पर नाक रगड़ने के लिए, सड़क पर घिसट कर चलने और सारे साहिबों को सलाम मारने के लिए मजबूर किया गया।
- लोगों को कोड़े मारे गए और गाँवों (गुजराँवाला, पंजाब) पर बम बरसाए गए।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



- हिंसा फैलते देख महात्मा गांधी ने आंदोलन वापस ले लिया।
- इस प्रकार रॉलेट एक्ट के खिलाफ किया गया सत्याग्रह आंदोलन समाप्त हो गया।

जनरल डायर के हुक्म से सिपाही लोगों को घिसट कर चलने के लिए मजबूर कर रहे हैं।

LET'S LEARN TOGETHER

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here